बाइबल से हम क्या सीखते हैं?

लेखक
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली-110049

प्रथम संस्करण 2001

मुद्रक:
प्रिन्ट इंडिया
ए-38/2, मायापुरी फेज-1
न्यू दिल्ली-110064।

विषय-सूची

		पृष्ठ
1.	उत्तम जीवन का सुसमाचार	1
2.	क्रूस का सुसमाचार	6
3.	एक विशेष प्रश्न	11
4.	जो उद्धार पाते हैं उनका क्या होता है?	15
5.	मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य क्या है?	20
6.	परमेश्वर का एकलौता पुत्र	25
7.	बाइबल से हम क्या सीखते हैं?	30
8.	बाइबल के दो नियम	35
9.	मनुष्य धर्मी कैसे बनता है?	39
10.	आप को फिर से जन्म लेने की आवश्यकता है	44
11.	एक दिन सभी मरे हुए जी उठेंगे	49
12.	एक मसीही कैसे बना जा सकता है?	54

उत्तम जीवन का सुसमाचार

बाइबल एक सुसमाचार की पुस्तक है। "सुसमाचार" शब्द का अर्थ है: खुशी का समाचार; एक ऐसा सन्देश जिसमें आनन्द और प्रसन्नता है। प्रभु यीशु मसीह ने एक बार कहा था, कि संसार में, पृथ्वी पर तो क्लेश और दुख ही दुख हैं, परन्तु हौंसला रखो, क्योंकि मैंने संसार को जीत लिया है। (यूहन्ना 16:33)। आज जब हम संसार पर ध्यान करते हैं, तो सब जगह क्लेश और दुखों के सिवाए हमें और कुछ नज़र नहीं आता। दिन-रात सब जगह लोग डर और भय में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। पृथ्वी पर सब जगह आतंक फैला हुआ है। लोग बाहर भी सुरक्षित नहीं हैं और अपने घरों के भीतर भी सुरक्षित नहीं हैं। लड़ाई और झगड़े चारों तरफ़ फैले हुए हैं। एक ही परमेश्वर के बनाए हुए सब लोग आपस में ही लड़ रहे हैं। छोटी-छोटी बातों पर, ज़मीन और जायदाद के टुकड़ों के लिये, पृथ्वी पर की नाशमान वस्तुओं के लिये, जिन्हें कोई भी मनुष्य अपने साथ नहीं ले जा सकता, लोग एक दूसरे से लड़ रहे हैं, और एक दूसरे की जानें ले रहे हैं। कोई राजनीतिक कारणों से लड़ रहा है; तो कोई आर्थिक कारणों से लड़ रहा है; और कोई अपने अधिकारों के लिये लड़ रहा है। व्यक्तिगत रूप से लोग लड़ रहे हैं; परिवारों में लड़ाईयां हो रही हैं, और देशों में लड़ाईयां हो रही हैं। जात-पात के झगड़ों में लोग एक दूसरे का खून बहा रहे हैं। शांति आज पृथ्वी पर यदि कहीं है, तो वह केवल जंगलों में है, जहां जानवर एक दूसरे से ऐसा व्यवहार नहीं

करते, जैसा कि आज हम अपने शहरों और कस्बों में, और गांवों और देहातों में देख रहे हैं। परन्तु तौभी यह एक सच्चाई है, कि जब तक इस संसार में हम हैं हमें दुखों और क्लेशों का; संकटों का और दुर्घटनाओं का सामना करना ही होगा। और इन सब बातों का केवल एक ही कारण है – और वह कारण है पाप – क्योंकि यदि पाप जगत में नहीं होता, तो इनमें से कोई भी चीज़ पृथ्वी पर न होती! ये सब बातें पृथ्वी पर क्यों हैं? क्योंकि पृथ्वी पर मनुष्यों के भीतर पाप है। ईर्ष्या है; क्रोध है; बैर-भाव है; स्वार्थ है; ऊंच-नीच और जात-पात है। प्रभु यीशु मसीह, जो स्वर्ग से, परमेश्वर के पास से पृथ्वी पर आया था, उसने सिखाया था: कि जैसा तुम चाहते हो कि अन्य लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो। (मत्ती 7:12)। कौन नहीं चाहता कि अन्य सभी लोग उनके साथ भलाई करें? सो हमें भी चाहिए, कि हम सब के साथ भलाई करें। पर आज पृथ्वी पर हर जगह पर हम क्या देखते हैं? हम हर जगह पर लोगों में केवल स्वार्थ को ही देखते हैं।

पर जब हम प्रभु यीशु मसीह पर ध्यान करते हैं, तो हम यह देखते हैं, कि वह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था। हम सब पृथ्वी को छोड़कर स्वर्ग पर जाने की आशा करते हैं। पर वह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था ताकि उसके द्वारा हमे स्वर्ग में जाने की आशा मिले। फिर जब हम प्रभु यीशु मसीह पर ध्यान करते हैं, तो हम यह भी देखते हैं, कि वह अपने सतानेवालों के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करता था। हम क्या करते हैं? हम हर एक से बदला लेने की कोशिश करते हैं। हम ताकत का जवाब ताकत से देते हैं। पर वह, जिसके पास सारी शक्ति थी, और जो अपनी अपार सामर्थ से सब को नाश कर सकता था, वह हम सब

के लिये निर्बल बन गया था। बाइबल का लेखक एक जगह इस प्रकार कहता है, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह को तो जानते हो, कि वह धनी होकर भी हमारे लिये कंगाल बन गया था, ताकि उसके कंगाल हो जाने से हम धनी हो जाएं। (2 कुरिन्थियों 8:9)। हम सब इस ज़मीन पर अधिक से अधिक जीना चाहते हैं। पर यीशु मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित करने को हमारे स्थान पर मर गया था। और बाइबल कहती है, कि जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था, वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् उसने अपने आप को ऐसा खाली कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता मे हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। (फिलिप्पियों 2:5-8)।

प्रभु यीशु मसीह के जीवन से हम यह सीखते हैं, कि हम सब को इस पृथ्वी पर किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए। हम यह सीखते हैं, कि हमें अन्य लोगों से वैसे ही प्रेम करना चाहिए जैसे कि हम स्वयं अपने आप से करते हैं। हम यह सीखते हैं, कि दूसरों के हित की चिन्ता हमें अवश्य होनी चाहिए। और हम यह सीखते हैं, कि हमारे जीवनों का उद्देश्य पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना होना चाहिए। जिस प्रकार से उसने परमेश्वर की इस इच्छा को पूरा करने के लिये अपने जीवन को बलिदान कर दिया था, कि वह क्रूस पर लटकाया जाकर मृत्यु दन्ड पाए ताकि उसकी मौत से हम सब के पापों का प्रायश्चित हो जाए।

और यही पृथ्वी पर सब लोगों के लिये एक सुसमाचार है। अर्थात्, परमेश्वर ने प्रभु यीशु मसीह को क्रूस पर बलिदान करने

के द्वारा पृथ्वी पर हर एक मनुष्य के पापों का प्रायश्चित कर दिया है। इसलिये, इस दुनिया को छोड़कर जब हम यहां से जाएंगे, तो मसीह में अपने पापों के छुटकारे के कारण हम परमेश्वर के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे; जहां हमेशा का सच्चा आनन्द और सच्ची शांति होगी। जब तक हम इस पृथ्वी पर हैं, हमें दुखों और क्लेशों का सामना करना ही होगा। किन्तु, परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उसने हम से ऐसा प्रेम रखा कि उसने हमें हमेशा के लिये दुखों और क्लेशों का सामना करने के लिये नहीं छोड़ दिया। उसने अपनी पुस्तक बाइबल में हमें यह सुसमाचार दिया है, कि यदि हम में से कोई भी उसके पुत्र मसीह यीशु में विश्वास लाएगा कि वह जगत के पापों का प्रायश्चित करने को मारा गया था; और अपनी सब बुराईयों से अपना मन फिराएगा, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेगा, और फिर अपने आगे का जीवन मसीह में होकर जिएगा; तो वह पृथ्वी पर से जब उठाया जाएगा तो वह परमेश्वर के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा मसीह के कारण।

विश्वास, मनुष्य, मसीह के बारे में सुनकर, मन से करता है। मन फिराने का अर्थ है, बुराई में जीवन न बिताने का निश्चय करना। और बपतिस्मा लेने का अर्थ है, पुराने जीवन को पानी के भीतर गाड़ देना और उसमें से बाहर आकर एक नए जीवन की चाल चलना। प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, कि जो भी विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस 16:16)। क्या आप परमेश्वर के सुसमाचार को मानकर अपने पापों से उद्धार पाना चाहते हैं?

निश्चय ही, इस संसार में, इस पृथ्वी पर कोई भी मनुष्य अपने जीवन को वास्तव में आनन्दमय और सुखद नहीं बना सकता। क्योंकि जैसे कि यीशु मसीह ने कहा था, कि संसार मे तो क्लेश और

दुख हमेशा ही रहेंगे। किन्तु परमेश्वर के सुसमाचार को स्वीकार करके और उसे मानकर हम में से हर एक अपने आनेवाले आत्मिक ओर अनन्त जीवन को हमेशा के लिये सुरक्षित, आनन्दमय, सुखद और शांतिमय बना सकता है। सो क्या आप परमेश्वर के सुसमाचार में विश्वास लाकर और उसे मानकर उसके पास उत्तम जीवन पाने के लिये आएंगे?

क्रूस का सुसमाचार

परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल को लगभग चालीस लेखकों ने अलग-अलग समयों और स्थानों पर रहकर लिखा था। उन में से एक लेखक का नाम था पौलुस। पौलुस जन्म से एक यहूदी था। और बड़ा ही पढ़ा-लिखा विद्वान था। वह यहूदियों के मंदिर में लोगों को उपदेश देता था। उन्हीं दिनों में जब यीशु के चेले जोश से भरे हुए मसीह की क्रूस की मौत और उसके मुर्दों में से जी उठने का प्रचार सब जगह करने लगे थे। और हज़ारों और लाखों की संख्या में यहूदी लोग मसीह में विश्वास लाकर और अपना-अपना मन फिराकर और यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेकर मसीह के अनुयायी बनने लगे थे (प्रेरितों 2:41)। तो पौलुस ने, जो उस समय शाऊल नाम से जाना जाता था, इस बात की शपथ खा ली थी कि वह मसीहीयत का नाम तक मिटाकर रख देगा। सो उसने अपनी एक टोली बना ली और वह सब जगह जाकर मसीही लोगों को सताने और मारने लगा। पर एक दिन जब वह ऐसे ही मसीहीयों को सताने के लिये जा रहा था, तो उसके चारों तरफ एक बहुत ही बड़ी रौशनी चमकी और वह अंधा होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। और उसने एक आवाज़ सुनी, कि, "हे शाऊल तू मुझे क्यों सताता है?" और जब उसने जानना चाहा कि वह आवाज़ किसकी है? तो उसे यह जवाब मिला कि "मैं यीशु हूं जिसे तू सता रहा है!" यह सुनकर पौलुस की तो मानो जान ही निकल गई। और उसने यीशु से पूछा कि तू मुझ से क्या चाहता है? जवाब में यीशु ने पौलुस से कहा कि अब तू शहर में जा और

वहीं पर तुझे बताया जाएगा कि मैं तुझसे क्या चाहता हूं। जो लोग पौलुस के साथ थे, वे उसे शहर में ले गए, जहां वह तीन दिन तक रहा। और तब प्रभु यीशु का एक सेवक उसके पास आया और उसने यीशु का सुसमाचार सुनाकर पौलुस से कहा, कि अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल। लिखा है, बाइबल में कि पौलुस ने तुरन्त उठकर बपतिस्मा लिया और उसी दिन से वह यीशु मसीह का एक अनुयायी बन गया। (प्रेरितों 9:1-18; 22:1-16)।

किन्तु, जो कुछ पौलुस के साथ घटा था उस से मसीह यीशु में उसका विश्वास ऐसा पक्का और दृढ़ हो गया था कि अब वह उसके लिये मरने तक को तैयार था! जिन लोगों को पहले वह सताता था, अब उन्हीं के साथ वह रहता था और उनके साथ मिलकर मसीह का सुसमाचार सब लोगों को सुनाता था। अब वह किसी का शत्रु नहीं था। पर अब उसके अपने ही यहूदी लोग उसके दुश्मन बन गए थे, और उसे मारना चाहते थे। पर न केवल प्रभु ने उसे उसके शत्रुओं से ही बचाया, पर उसे अपने सुसमाचार को प्रचार करने के लिये हर जगह बहुतायत से इस्तेमाल भी किया। और न सिर्फ़ इतना ही, पर प्रभु ने पौलुस को अपने पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित करके उस से चौदह पुस्तकें भी लिखवाईं, जिनका स्थान आज भी बाइबल में बड़ा ही प्रमुख है। क्योंकि इन पुस्तकों मे, जिन्हें पत्रियां भी कहा जाता है, परमेश्वर के पवित्रात्मा ने, पौलुस को प्रेरणा देकर, कुछ बड़ी ही खास बातों को लिखवाया है।

इन्हीं पुस्तकों मे, एक पुस्तक का नाम है गलतियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री। बाइबल की इस किताब को पौलुस ने गलतिया नाम की जगह पर रहनेवाले मसीही लोगों को लिखा था। इस पुस्तक के 6 अध्याय के 14 पद में पौलुस ने उन्हें लिखकर इस प्रकार कहा था: पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का

घमन्ड करूं परन्तु केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।

यहां से हम यह देखते हैं, कि पौलुस की दृष्टि में यीशु मसीह के क्रूस का महत्त्व सबसे बड़ा था। क्रूस पर वह घमन्ड करता था। पहले वह मसीह के क्रूस का बैरी था। क्योंकि तब वह क्रूस का अर्थ नहीं जानता था। मसीहीयत को वह अनेकों अन्य धर्मों में से एक धर्म ही समझता था। और यीशु मसीह को वह अनेकों अन्य धर्म गुरूओं में से एक और गुरू समझता था। इसलिये जब उसने देखा था, कि हज़ारों और लाखों की संख्या में लोग मसीह यीशु के अनुयायी बन रहे हैं, तो उसने मसीह का और उसकी मसीहीयत का कड़ा विरोध किया था।

पर अब, जब उस ने जान लिया और मान लिया, कि यीशु मसीह कोई मनुष्य नहीं, परंतु परमेश्वर का पुत्र था। और वह अपने किसी अपराध के लिये नहीं, पर संसार के सारे लोगों के पापों का प्रायश्चित करने को परमेश्वर की इच्छा से क्रूस पर चढ़ाकर मारा गया था। तो उसका सारा का सारा दृष्टिकोण मसीह के बारे में, और उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में, और मसीही लोगों के बारे में, और स्वयं अपने बारे में भी बदल गया था! अब यीशु मसीह को वह परमेश्वर का एकलौता पुत्र और जगत का उद्धारकर्त्ता मानता था! उसका क्रूस और उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना उसके लिये अब घमन्ड की बात थी जिसका सुसमाचार सुनाते वह थकता नहीं था। पहले वह संसार की बातों में और पृथ्वी पर की चीज़ों पर, और अपने ज्ञान और अहोदे पर घमन्ड करता था। लेकिन मसीह को जान लेने के बाद और उसके सुसमाचार को मानकर अपना जीवन उसे दे देने के बाद, अब उसका घमन्ड सिर्फ़ एक ही बात थी, अर्थात् मसीह और क्रूस पर उसका मारा जाना। वह

कहता है, कि मैने मसीह को मानकर अब ऐसा मान लिया है, कि सारा का सारा संसार मेरी दृष्टि में क्रूस पर चढ़ चुका है। यानि संसार और सांसारिक बातें अब मेरे लिये ज़िन्दा ही नहीं हैं, कि मैं उन के लिये जीऊं या उन में अपना जीवन बिताऊं। और, संसार जैसा मुझे पहले जानता था, अब मैं संसार के लिये वैसा नहीं हूं।

मित्रो, आज भी बहुतेरे लोग इस संसार में ऐसे हैं, जो प्रभु यीशु मसीह को वैसे नहीं मानते, जैसे कि वास्तव में उन्हें उसे मानना चाहिए, अर्थात् परमेश्वर का एकलौता पुत्र। वे उसे एक गुरू या एक भविष्यवक्ता या एक भगवान मानते हैं। पर मसीह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था। आज भी संसार में बहुतेरे ऐसे लोग हैं, जो यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने की बात को एक मूर्खता की बात समझते हैं। पर वास्तव में यीशु मसीह का क्रूस पर चढ़ाया जाना मानवता के लिये परमेश्वर की ओर से एक विशाल सुसमाचार है। क्योंकि मसीह को क्रूस पर चढ़वाकर परमेश्वर ने सारे जगत के सब लोगों के सब पापों का प्रायश्चित किया था। इसीलिये, प्रभु यीशु मसीह ने यह कहा था, कि, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, और बिना मेरे कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता।

पौलुस ने इस बात को पूरे मन से स्वीकार करके यीशु मसीह में विश्वास किया था। और उसने अपना मन पहले की सब बातों से फिरा लिया था। और तुरन्त अपने पापों को धो डालने के लिये उठकर बपतिस्मा लिया था। और फिर उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा था। मसीह और उसका क्रूस ही अब उसका जीवन, और उसका उद्देश्य और उसका घमन्ड था।

और परमेश्वर चाहता है, कि आज पृथ्वी पर हर एक व्यक्ति, पौलुस की ही तरह, उसके सुसमाचार की बातों को मानकर, उसके मसीह में होकर एक नया इन्सान बन जाए। सो, इस पाठ के अन्त में, मैं आपके सामने एक ही सवाल रखूंगा, और वह यह, कि मसीह

और उसके क्रूस की कथा आप की दृष्टि में एक मूर्खता की बात है; या उसमें आप परमेश्वर की सामर्थ और मानवता के उद्धार को देखते हैं?

यह एक ऐसा सवाल है जिसका जवाब हम में से हर एक को देना आवश्यक है। क्योंकि इसी सवाल के जवाब पर हमार सारा आत्मिक भविष्य निर्भर करता है। क्या मसीह का क्रूस पर मरना हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये था? या क्या यह एक मूर्खता की बात है?

एक विशेष प्रश्न

इस ज़मीन पर रहते हुए हर एक दिन हमारे सामने बहुतेरे सवाल आते हैं। लोग हम से सवाल करते हैं, और हम लोगों से सवाल करते हैं। लेकिन एक प्रश्न जो कि वास्तव में बड़ा ही अहम और महत्त्वपूर्ण है, उस पर शायद ही किसी मनुष्य का ध्यान कभी जाता है। और आज, इस समय हम उसी बड़े ही खास सवाल के ऊपर विचार करने जा रहे हैं।

बाइबल में, मरकुस 10:17-22 में लिखा है, कि एक बार जब प्रभु यीशु मार्ग में जा रहा था, तो एक नौजवान दौड़ता हुआ यीशु के पास आया, और उसके आगे घुटने टेककर, प्रभु से पूछा, कि हे उत्तम गुरू, "*अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं?*" प्रभु ने उस नौजवान से कहा, कि तू परमेश्वर की आज्ञाओं को जानता है, अर्थात् हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, किसी की झूठी गवाही न देना, छल या कपट न करना अपने माता-पिता का आदर करना, इत्यादि। यह सुनकर उस नवयुवक ने यीशु से कहा, कि हे गुरू, इन सब बातों को तो मैं अपने बचपन से मानता आया हूं। यह सुनकर यीशु को उस पर बड़ी दया आई, और प्रभु ने उससे कहा, कि अब भी तुझ में एक बात की घटी है। और प्रभु ने उस से कहा, कि, जा, जो कुछ भी तेरा है उसे बेचकर कंगालों को दे दे और आकर मेरे पीछे हो ले, तो तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा। बाइबल में लिखा है, मित्रो, कि यह बात सुनकर उस नौजवान के चेहरे पर उदासी छा गई, और बिना कुछ कहे वह शोक करता हुआ वहां से चला गया। इसलिये,

क्योंकि, लिखा है, कि वह बड़ा धनी था!

उस व्यक्ति के जीवन में इसी एक बात की घटी थी! नैतिक दृष्टिकोण से वह एक अच्छा आदमी था। उसमे बहुत सी अच्छाईयां थीं। एक धनी नौजवान होने के बावजूद वह परमेश्वर से डरता था; उसका चाल-चलन बड़ा ही अच्छा था। पर उसमें एक बात की कमी थी! जी हां, सिर्फ एक बात की! और वही एक बात उसके और स्वर्ग के बीच में एक दीवार थी!

प्रभु यीशु ने एक और जगह शिक्षा देकर कहा था, कि जब तक तुम अपना मन नहीं फिराओगे तुम अपने पापों में ही नाश हो जाओगे। (लूका 13:3)। स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने के लिये हर एक मनुष्य के लिये यह बड़ा ही ज़रूरी है कि वह प्रत्येक बुराई से अपना मन फिराए। पर मनुष्य को न केवल प्रत्येक बुरे कामों से ही अपना मन फिराने की आवश्यकता है। पर एक ऐसी वस्तु से भी मन फिराने की आवश्यकता है जिसे इन्सान अपने जीवन में परमेश्वर और उसकी इच्छा से अधिक महत्त्व देता है। एक अन्य स्थान पर प्रभु ने कहा था, कि यदि कोई जन अपने माता-पिता को या अपने बाल-बच्चों को या संसार की किसी भी वस्तु को मुझ से अधिक प्रेम करता है तो वह मेरे योग्य नहीं हो सकता। और जो अपना क्रूस उठाकर प्रतिदिन मेरे पीछे न चले, अर्थात् दुख-मुसीबतों का सामना करते हुए भी मेरे पीछे न चले, तो वह मेरे योग्य नहीं हो सकता। क्योंकि जो अपने जीवन को संसार के लिये बचाना चाहता है, वास्तव में वह उसे खोएगा, पर जो अपने जीवन को मेरी इच्छा पर चलकर खोएगा, वही वास्तव में अपने जीवन को बचाएगा। (मत्ती 19:37-39)।

वह नौजवान, जिसके बारे में अभी हमने देखा था, और जो खुशी के साथ प्रभु के पास आने के बाद, उदास होकर वापस लौट गया था। उसमें हमें कोई बुराई नज़र नहीं आती। यदि मनुष्यों के

दृष्टिकोण से हम उसके बार में सोचें, तो वह हमें एक नेक और अच्छा इन्सान मालुम पड़ता है। लेकिन, प्रभु का देखना मनुष्य का सा देखना नहीं है। क्योंकि मनुष्य तो केवल बाहरी या ऊपरी बातें ही देखता है। पर ईश्वर मनुष्य के भीतर की बातें देखता है। और जिस बुराई को प्रभु ने उस नौजवान के भीतर पाया था वह यह थी, कि वह ईश्वर से भी अधिक महत्त्व अपने धन-सम्पत्ति को देता था! उसे परमेश्वर से भी अधिक प्रेम अपने धन से था। उसका भरोसा प्रभु से भी बढ़कर अपने धन पर था! सो, प्रभु ने उसे आज्ञा देकर कहा था, कि पहले तू अपना मन फिरा। अर्थात् जिस वस्तु को तू अपने जीवन मे सबसे बड़ी या पहली समझता है, उसे अपने मन से पहले निकाल दे, और तब मेरे पास आ, और मैं तुझे स्वर्गीय धन, अर्थात् स्वर्ग में अनन्त जीवन दूंगा!

लेकिन, स्वर्ग में अनन्त जीवन पाना हम में से कौन नहीं चाहता? हम में से कोई भी नरक में नहीं जाना चाहता। यद्यपि एक सच्चाई यह है, कि जिस प्रकार से आज हम ज़िन्दा हैं, उसी तरह से हम सब मरेंगे भी। और मरने के बाद इस संसार में कोई वापस नहीं आता। हम अपने शरीरों को त्यागकर यहां से हमेशा के लिये चले जाते हैं। पर कहां जाएंगे हम? क्या हम स्वर्ग में जाएंगे? या नरक में जाएंगे? हम कहां अनन्त जीवन पाएंगे? हम हमेशा के लिए कहां जाकर रहेंगे?

पवित्र बाइबल में, अर्थात्, परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखा है, कि परमेश्वर हम सब को स्वर्ग में अनन्त जीवन देना चाहता है। और इस बात को प्रमाणित करने के लिये, उसने अपने वचन को एक मनुष्य के रूप में ज़मीन पर भेजकर उसे सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस पर चढ़वाकर मृत्यु दन्ड दिलवाया था। और परमेश्वर चाहता है, कि आज पृथ्वी पर हर एक जन उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाए कि वह हमारे

पापों का प्रायश्चित है। और अपना मन हर एक संसार की वस्तु से फिराकर उसकी आज्ञानुसार वह जल के भीतर गाड़ा जाए, और उस में से बाहर आए, यानि अपने पापों की क्षमा के लिये जल मे बपतिस्मा ले। और इस प्रकार उसकी इच्छा का पालन करके प्रत्येक दिन अपना जीवन उसमें होकर उसकी मर्ज़ी पर चलकर व्यतीत करे।

क्या आप, आज उसकी इच्छा को मानने को तैयार हैं? या क्या आप भी आज उस नौजवान की तरह उसकी बात को सुनकर वापस लौट जाएंगे?

यदि इन बातों के बारे में हम आपकी कोई सहायता कर सकते हैं, तो आज ही हमें लिखकर सूचित करें।

जो उद्धार पाते हैं उनका क्या होता है?

इस सवाल के जवाब में, कि जो उद्धार पाते है। उनका क्या होता है, प्रत्यक्ष ही है, कि आप यह कहेंगे, कि वे सब स्वर्ग में जाएंगे। पर स्वर्ग में जाने से पहले न्याय का दिन आएगा। वह दिन जिस में प्रभु यीशु आकाश से प्रकट होगा। जिस दिन उसकी सामर्थ से सभी मरे हुए लोग जिलाए जाएंगे। और उसकी सामर्थ से अमरता को पहन लेंगे। और अपने-अपने कामों के आधार पर अपना-अपना प्रतिफल पाएंगे।

उद्धार पाने से हमारा अभिप्राय पाप से छुटकारा पाकर अपने पापों की मुक्ति प्राप्त करने से है। पवित्र बाइबल के अनुसार, परमेश्वर ने अपने वचन को एक मनुष्य बनाकर स्वर्ग से पृथ्वी पर भेजा था। (यूहन्ना 1:1, 2, 14)। उसी को उसने सारे जगत के पापों का प्रायश्चित बनाकर, सारी मानवता के पापों के लिये क्रूस पर मृत्यु दन्ड दिलवाकर दन्डित भी किया था। और बाइबल की शिक्षानुसार, आज कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के इस सुसमाचार को ग्रहण करके जब उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाता है, और पाप से मन फिराकर जल में गाड़े जाकर बपतिस्मा लेता है, तो परमेश्वर, यीशु मसीह की पापियों के बदले में मृत्यु के कारण, उस व्यक्ति के सब पापों को क्षमा कर देता है। और वह जन इस प्रकार यीशु मसीह में एक नया इन्सान बन जाता है। पृथ्वी पर रहते हुए वह स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता। पर मसीह में होकर वह संसार

में रहते हुए भी संसार का नहीं होता, क्योंकि, बाइबल में लिखा है कि उस मनुष्य को मसीह स्वयं अपनी कलीसिया में मिला लेता है। (प्रेरितों 2:47)।

कलीसिया, जिसे अंग्रेज़ी भाषा में चर्च कहा जाता है, मनुष्यों के हाथों से बनाया हुआ घर नहीं है। पर कलीसिया का अर्थ है, परमेश्वर के लोगों की मन्डली! न कि सीमेंट और ईंटों से बनाया हुआ घर। परमेश्वर आत्मा है। उसे किसी भी घर या भवन के भीतर कैद नहीं किया जा सकता। अकसर लोग उस स्थान को बड़ा ही पवित्र मानते हैं जिसमें वे आराधना या उपासना करने के लिये सप्ताह में एक या दो बार एकत्रित होते हैं। वे ऐसा दर्शाते हैं मानों परमेश्वर उसी में रहता है। लेकिन जो लोग परमेश्वर की इच्छा को मानकर अपने पापों से उद्धार पाते हैं, बाइबल उन से कहती है, कि क्या तुम नहीं जानते कि "तुम परमेश्वर के मंदिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है।" (1 कुरिन्थियों 3:16)। सो, जो लोग परमेश्वर की इच्छा को मानकर अपने पापों से उद्धार पाते हैं वे ही परमेश्वर का मन्दिर बन जाते हैं और परमेश्वर का आत्मा, उसके वचन के द्वारा, जिसे बाइबल मे उसकी प्रेरणा से लिखा गया था, उनके भीतर निवास करता है।

सो परमेश्वर क्या चाहता है? परमेश्वर यह चाहता है, कि जब हम उसकी इच्छा को मानकर, अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करके, पवित्र और पाप-मुक्त हो जाते हैं, तो हम स्वयं अपने आप को पाक और साफ़ रखें। पवित्र बाइबल में लिखा है:

"और उसी के साथ बपतिस्मे में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे" "सो, जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है, और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की

नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रकट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रकट किए जाओगे। इसलिये, अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा, और लोभ को जो मूर्तीपूजा के बराबर है। इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा ना माननेवालों पर पड़ता है। और तुम भी, जब इन बुराईयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते भी थे। पर अब तुम भी इन सब को, अर्थात्, क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा, और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो। और एक दूसरे से झूठ मत बोलो, क्योंकि तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहन लिया है, जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है। उसमें न तो यूनानी रहा, न यहूदी, न खतना, न खतना-रहित, न जंगली, न स्कूती, न दास और न स्वतंत्र: पर केवल मसीह सब कुछ और सब में है। इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं के समान जो पवित्र और प्रिय हैं बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। और यदि किसी को किसी पर दोष लगाने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे कि प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किये, वैसे ही तुम भी करो। और इन सब के ऊपर, प्रेम को, जो सिद्धता का कटिबन्ध है, बान्ध लो। और मसीह की शान्ति जिसके लिये तुम बुलाए भी गए हो, तुम्हारे मनों में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो। मसीह के वचन को अपने मनों में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक-दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और

आत्मिक गीत गाओ। और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।" (कुलुस्सियों 2:12 तथा 3:1-17)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि जो लोग प्रभु यीशु मसीह में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञाओं को मानकर उसके अनुयायी बनते हैं, उन्हें मसीह अपनी कलीसिया में मिला लेता है। कलीसिया उसके द्वारा उद्धार पाए हुए लोगों की वह मंडली है जो उसकी आत्मिक देह है। मसीह उसका सिर है। वह उसी के नाम से कहलाती है और, इसीलिये बाइबल कलीसिया को "मसीह का राज्य" भी कहती है। (कुलुस्सियों 1:13, 14, 18; इफिसियों 1:22, 23)। मसीह में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा को मानकर न केवल वे लोग अपने पिछले जीवन के पापों से ही मुक्ति पाते हैं। पर हर एक दिन उसमें रहकर और उसकी आज्ञाओं पर चलकर प्रतिदिन पाप करने से भी बचे रहते हैं। और वे अपने जीवन के अन्त में, उसी के द्वारा, परमेश्वर के स्वर्ग में अनन्त जीवन भी पाएंगे।

सो यदि आज आप भी मसीह यीशु में यह विश्वास लाएंगे कि वह आपके पापों के बदले में क्रूस पर मारा गया था। और अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा पाने के लिये जल में बपतिस्मा लेंगे; तो आप को भी मसीह, पाप से आप का उद्धार करके, अपनी कलीसिया में मिला लेगा। (प्रेरितों 2:37, 38, 47)। ऐसा करने से आप को जो आशा मिलेगी वह न केवल इस जीवन के लिये ही होगी, पर ऐसा करके आप इस बात के लिये भी आश्वस्त हो जाएंगे, कि इस पृथ्वी पर के जीवन की समाप्ति के बाद आपको स्वर्ग में हमेशा का अनन्त जीवन मिलेगा!

क्या यह वास्तव में खुशी की बात नहीं है! क्या आप ने कोई और इससे भी बड़ी खुशी की बात कभी सुनी है? सचमुच

में इस से बड़ी खुशी की कोई और बात हो ही नहीं सकती। क्योंकि मनुष्य संसार में रहकर यदि सारे जगत को भी प्राप्त करले, जैसे कि एक जगह प्रभु यीशु ने कहा था, पर अन्त में अपनी आत्मा को ही खो दे, तो उसे क्या लाभ होगा? पर यदि कोई मनुष्य संसार में रहकर सब कुछ खोकर भी अन्त में अपनी अमर आत्मा को बचा ले, तो क्या इससे बड़ा कोई और लाभ मनुष्य को हो सकता है?

मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य क्या है?

आज हम अपने पाठ में इस विषय पर बात करेंगे, कि पृथ्वी पर मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य क्या है?

इस बात में कोई संदेह नहीं है, कि जिस तरह से आज हम सब ज़िन्दा हैं, हम में से हर एक को मौत का सामना भी करना पड़ेगा। यानि हम सब इस पृथ्वी पर कुछ ही समय के लिये आए हैं। बाइबल में लिखा है, कि यहां हम सब एक मुसाफ़िर की तरह हैं। बाइबल यह भी कहती है, कि मनुष्य का जीवन पृथ्वी पर पानी की भाप की तरह है; और समुद्र की लहरों की तरह है; और घास के फूल की तरह है। सो, इस बात को ध्यान में रखकर, हमें यह याद रखना चाहिए, कि एक दिन हमें इस संसार से जाना भी है। पर इस से पहले, कि हम यहां से सदा के लिये चले जाएं, हमारा ध्यान इस बात पर ज़रूर जाना चाहिए, कि मैं इस पृथ्वी पर क्यों हूं? संसार में मेरा कर्त्तव्य क्या है?

एक बड़ी ही खास बात हमें यह याद रखनी चाहिए, कि न केवल परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया ही है, पर उसने मनुष्य पर अपनी इच्छा को भी बड़े ही साफ़ शब्दों में प्रदर्शित किया है। अर्थात्, उसने इन्सान को बताया है कि वह उस से क्या चाहता है।

बाइबल में एक जगह पर लिखा हुआ है, कि पृथ्वी पर मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यह है: कि एक तो वह परमेश्वर का भय माने, और दूसरे यह, कि मनुष्य परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करे।

(सभोपदेशक 12:13-14)। अब, परमेश्वर का भय मानने का अर्थ क्या है? क्या हमें परमेश्वर का भय इसलिये मानना चाहिए, क्योंकि वह दन्ड देनेवाला और नाश करनेवाला परमेश्वर है? या क्या परमेश्वर का भय मानने का अर्थ यह है, कि हम उस से ऐसे डरें जैसे कोई किसी जल्लाद या खूंखार और गुस्सैल आदमी से डरता है? वास्तव में परमेश्वर का भय मानने का अर्थ यह है, कि हम उसका आदर और सम्मान करें; उसे इज़्ज़त दें। क्योंकि वह हमारा स्वर्गीय और आत्मिक पिता है। उसी ने हमें यह जीवन दिया है। और जो कुछ भी हमें मिलता है, या हमारे पास है, यह सब उसी की ओर से है। उसने हमें जीवन दिया है, और हमारे खाने-पीने के लिये और हमारे आराम के लिये हमें सब वस्तुएं भी दी हैं। सो, एक अच्छे, और अनुग्रही और दयावान पिता के रूप में हमें परमेश्वर का भय मानना चाहिए। अर्थात्, इसलिये, और इस दृष्टिकोण से हमें उसका भय मानना चाहिए क्योंकि हम उसका आदर और सम्मान करते हैं। क्योंकि हम जानते हैं, कि न केवल उसने हमें यह जीवन ही दिया है, पर वही हमारी प्रत्येक आवश्यक्ता को भी पूरा करता है।

और जब हम इस बात पर ध्यान देते हैं, कि परमेश्वर हमारी प्रत्येक आवश्यक्ता को पूरा करता है, तो हम यह भी देखते हैं, कि वह किसी का पक्षपात नहीं करता। उसका सूरज सबके ऊपर चमकता है। उसकी चलाई हवा हम सब के लिये है। उसकी भेजी वर्षा से हम सब को लाभ होता है। और उसने जो कुछ पैदा किया है, उस को खा-पीकर हम सब जिंदा रहते हैं। यानि वह किसी का पक्षपात नहीं करता, उसकी बनाई हुई प्रत्येक वस्तु हर एक इन्सान के लिये है।

और न केवल शारीरिक दृष्टिकोण से ही वह हमारी

आवश्यक्ताओं को पूरा करता है। पर वह हमारी आत्मिक आवश्यक्ताओं को भी पूरा करता है। प्रभु यीशु मसीह ने सिखाया था कि, मनुष्य केवल रोटी से ही ज़िन्दा नहीं रहता, पर उस वचन के द्वारा वास्तव में ज़िन्दा रहेगा जो परमेश्वर की ओर से दिया गया है। (लूका 4:4)। कैसा जीवन पृथ्वी पर हमारा होना चाहिए, परमेश्वर हम से क्या चाहता है? इन सब बातों के बारे में परमेश्वर ने हमें अपनी पुस्तक बाइबल में बताया है। पर इस बात पर ध्यान दें, कि बाइबल कहती है, कि, परमेश्वर ने अपने प्रेम की भलाई को जगत के सब लोगों के ऊपर इस तरह से प्रदर्शित किया है, कि जब हम सब पापी ही थे, तो उसने होने दिया कि उसका पुत्र यीशु मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस के ऊपर मारा जाए। (रोमियों 5:8; 1 यूहन्ना 4:10)।

परमेश्वर जानता है, कि पृथ्वी पर हर एक मनुष्य पापी है। और प्रत्येक मनुष्य को पाप से मुक्ति और छुटकारे की आवश्यकता है। क्योंकि यदि मनुष्य अपने पापों को साथ लिये हुए ही इस संसार से चला जाए तो वह परमेश्वर के पास स्वर्ग में नहीं जा सकता। और परमेश्वर यह भी जानता है, कि मनुष्य स्वयं कुछ भी करके या कुछ भी देकर अपने पापों का प्रायश्चित स्वयं नहीं कर सकता और अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करके स्वयं अपने आप को स्वर्ग के योग्य नहीं बना सकता । सो उसने अपने अनुग्रह और दया के कारण मनुष्य की इस आत्मिक आवश्यकता को भी खुद पूरा कर दिया है। वह स्वयं ही, यीशु मसीह में होकर, स्वर्ग से ज़मीन पर आ गया था। उसने संसार के सब लोगों के पापों को स्वयं अपने ही ऊपर ले लिया था। और स्वयं अपने ही आप को बलिदान करके अपनी मृत्यु के द्वारा जगत के सारे पापों का प्रायश्चित कर दिया था। और इस तरह से हमारे प्रेमी और अनुग्रही, और दयावान

परमेश्वर ने हम सब के लिये स्वर्ग में प्रवेश करने का एक मार्ग और द्वार तैयार कर दिया है।

अब, जब हम परमेश्वर की शारीरिक आशीषों पर ध्यान करते हैं, तो हम यह देखते हैं कि उसने इन सब वस्तुओं को बनाया तो है, जो शारीरिक दृष्टिकोण से हमारे लिये आवश्यक हैं; जैसे कि अनाज, फल और सब्जियां, और पानी इत्यादि। पर उन्हें प्राप्त करना और ग्रहण करना और उनका सेवन करके उन सब से लाभ उठाना, यह कर्त्तव्य हमारा है। यानि परमेश्वर ज़बरदस्ती करके उन्हें हमें नहीं देता, या उन चीज़ों को हमारे मुंह में नहीं डालता। पर हमें स्वयं उन वस्तुओं को प्राप्त करके, उन्हें सेवन करके, उन से लाभ उठाना पड़ता है।

और ऐसे ही, परमेश्वर की आत्मिक आशीष, अर्थात् उद्धार या पापों से मुक्ति अथवा छुटकारा पाना भी है। यद्यपि कि, परमेश्वर ने हम सब के पापों का प्रायश्चित अपने अनुग्रह के द्वारा कर तो दिया है। पर उसने हमें यह भी बताया है, कि किस प्रकार, उसके प्रायश्चित के द्वारा, हमें हमारे पापों से छुटकारा मिलता है। अर्थात्, परमेश्वर ने हमें बताया है, कि अपने पापों से छुटकारा या मुक्ति प्राप्त करने के लिये हमें क्या करना चाहिए।

परमेश्वर की बाइबल में लिखा है, कि अपने पापों से मुक्ति पाने के लिये हर एक व्यक्ति को मसीह यीशु में यह विश्वास लाना चाहिए कि वह परमेश्वर का पुत्र है और हमारे पापों का प्रायश्चित है; और हर एक व्यक्ति को अपना मन फिराकर, अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु की आज्ञा मानकर जल में गाड़े जाकर, बपतिस्मा लेना चाहिए। और, फिर परमेश्वर की आज्ञा मानकर, मसीह यीशु के जीवन के आदर्श का पालन करके, परमेश्वर के लिये एक नए जीवन का निर्वाह करना चाहिए। एक ऐसा जीवन

जिसमें कोई पाप और बुराई न हो। जिस जीवन में मसीह की तरह सब लोगों के लिये प्रेम, दया और सहानुभूति हो।

सो यह है मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य इस पृथ्वी पर, अर्थात्, आदर और सम्मान के साथ परमेश्वर का भय मानना, और उसकी सब आज्ञाओं का पालन करना। और जो मनुष्य ऐसा नहीं करता, उसे यह याद रखना चाहिए, कि बाइबल चेतावनी देकर यह भी कहती है, कि परमेश्वर ने एक दिन ठहराया है, जिस दिन वह सब मनुष्यों का, और सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा। (सभोपदेशक 12:13-14)।

परमेश्वर का एकलौता पुत्र

मैं आप सबको प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार प्रचार करता हूं। प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र था। यूं तो मसीह एक मनुष्य था, जो आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व हमारी ही तरह इस ज़मीन पर चलता फिरता था। लेकिन वह केवल एक मनुष्य ही नहीं था। किन्तु वास्तव में, वह परमेश्वर था। वह पृथ्वी पर एक मनुष्य के रूप में ही प्रकट हुआ था। उसने एक मनुष्य की ही तरह जन्म लिया था। पर उसका जन्म एक अद्‌भुत और निराला जन्म था। क्योंकि वह एक कुमारी से पैदा हुआ था। उसकी माता का नाम मरियम था। और वह गलील के नासरत नामक नगर में रहती थी। मरियम परमेश्वर से डरती थी। और ऐसे ही परमेश्वर से डरने वाले यूसुफ नाम के एक व्यक्ति के साथ उसकी मंगनी हो चुकी थी। इसलिये, परमेश्वर ने पृथ्वी पर अपने जन्म के लिये मरियम को चुन लिया था। बाइबल में लिखा है, कि एक दिन स्वर्ग से परमेश्वर का एक दूत मरियम के पास आया था। और उसने मरियम को यह समाचार दिया था, कि वह एक पुत्र को जन्म देगी, और वह पुत्र परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा, और उसका नाम यीशु रखा जाएगा। प्रत्यक्ष ही है, कि यह सुनकर मरियम के आश्चर्य का ठिकाना न रहा था! और उसने आश्चर्य-चकित होकर, और घबराकर, परमेश्वर के दूत से कहा था कि ऐसा कैसे हो सकता है? यह तो असम्भव बात है! पर स्वर्गदूत ने मरियम से कहा था, कि क्या परमेश्वर से कोई भी बात असम्भव है?

और, ऐसे ही, परमेश्वर का दूत यूसुफ के पास भी गया था। और उसे भी परमेश्वर की इस अजीब और आश्चर्य-जनक योजना के बारे में बताया था। और उसे आज्ञा दी थी, कि वह परमेश्वर की इस अद्‌भुत योजना को पूरा होने के लिये मरियम का साथ दे। और क्योंकि मरियम और यूसुफ दोनों ही परमेश्वर से डरते थे, इसलिये उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का पूरी तरह से पालन किया था। बाइबल में इसी कारण से यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र कहा गया है। लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)।

यीशु मसीह को बाइबल में परमेश्वर का "एकलौता पुत्र" कहा गया है। क्योंकि वह संसार में परमेश्वर की ही इच्छा और सामर्थ से पैदा हुआ था। वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर का वचन एक मनुष्य बनकर पृथ्वी पर आ गया था। और इसका एक बहुत बड़ा कारण था! और वह कारण था "पाप"! जिसकी वजह से सारी मानवता परमेश्वर से अलग थी। और आज भी अलग है।

और वास्तव में, बात तो यह है, कि अगर परमेश्वर यीशु में होकर इस ज़मीन पर न आया होता। और उस ने जगत के सब पापों के लिये स्वयं अपने आप को दोषी मानकर, संसार के पापों का प्रायश्चित करने को अपने आप को बलिदान न किया होता। तो आज ज़मीन पर कौन सा ऐसा इन्सान हो सकता था जो यह कहने का हक रखता; या जो आशा और आश्वासन के साथ आज यह कह सकता, कि मैं जानता हूं, कि परमेश्वर ने मेरे सब पाप क्षमा कर दिये हैं; और मैं जानता हूं; कि मेरे पापों का प्रायश्चित

हो चुका है; और मैं पृथ्वी पर के इस जीवन के बाद स्वर्ग में परमेश्वर के पास जाऊंगा! और, यदि कोई मनुष्य आज मसीह यीशु में नहीं है, यानि, जिसने उसमें अपने सारे मन से विश्वास नहीं किया है; और जिस ने उसकी आज्ञा मानकर, अपना मन बदलकर, अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा नहीं लिया है; और जो उसमें रहकर अपना जीवन नहीं जी रहा है। क्या वह इन्सान आशा और विश्वास के साथ यह कह सकता है कि उसे सब पापों से मुक्ति मिल चुकी है और वह स्वर्ग में प्रवेश करने के लिये तैयार है?

वास्तव में, बात तो यह है, कि पाप से मनुष्य का उद्धार केवल परमेश्वर ही कर सकता है। और उसने मनुष्य का उद्धार करने के लिये एक बहुत बड़ा बलिदान दिया है। और परमेश्वर ने मनुष्य को बताया है, कि उसने मनुष्य को पाप से उद्धार करने के लिये कैसा महान् कार्य किया है। और उसने मनुष्य को यह भी बताया है कि उसे परमेश्वर से उद्धार को प्राप्त करने के लिये क्या करना चाहिए। पर क्या मनुष्य परमेश्वर की बात सुनता है? वास्तव में, मनुष्य तो उद्धार को ज्ञान से प्राप्त करना चाहता है। जो कि असम्भव है! वह तो यह जानना चाहता है, कि परमेश्वर का पुत्र कैसे हो सकता है? और क्रूस के ऊपर वह सारी मानवता के पापों के बदले में कैसे मर सकता है? परमेश्वर की ज्ञान की बातें तो मनुष्य को मूर्खता जान पड़ती है। सो वह स्वयं अपनी ही बुद्धि से तरह-तरह के परीक्षण करता है, जैसा कि मनुष्य सदियों से करता आया है। और वह स्वयं अपने ही भलाई के "अच्छे" कामों से अपने पापों से उद्धार प्राप्त करना चाहता है। अपनी ही इच्छा से वह उस सर्वशक्तिमान के आकार और चित्र बनाता है, और उनके स्तुतिगान करता है! फल-फूल, और धन उसके आगे चढ़ाता है! इन्हें मनुष्य ज्ञान की बात समझता है। किन्तु, परमेश्वर का ज्ञान

उसको मूर्खता लगता है!

प्रत्यक्ष ही है, कि लाखों और करोड़ों लोग रोज़ाना कुछ ही समय में इस दुनिया से हमेशा के लिये चले जाते हैं। पर किस आशा के साथ वे यहां से जाते हैं? वास्तव में उनके पास कोई आशा नहीं होती। वे तो, यदि कुछ जानते हैं, तो बस इतना जानते हैं, कि वे अपने-अपने कर्मों के आधार पर एक बार फिर से इस पृथ्वी पर आएंगे! और यही सिलसिला सदियों तक चलता रहेगा! वे आते रहेंगे और जाते रहेंगे, अपने-अपने कर्मों के फलों को भुगतने के लिये। किन्तु यह मनुष्य का अपना विश्वास है। यह मनुष्य की कल्पना है। पर यह सच्चाई नहीं है!

सच्चाई तो यह है, वास्तव में, कि मनुष्य केवल एक ही बार इस संसार में आता है, और फिर वह हमेशा के लिये इस संसार से चला जाता है। परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में लिखा है, कि मनुष्यों के लिये एक ही बार मरना और उसके बाद अपने-अपने प्रतिफल को प्राप्त करना परमेश्वर की ओर से नियुक्त किया गया है। (इब्रानियों 9:27)। मरने के बाद प्रत्येक मनुष्य या तो नरक के अनन्त विनाश में जाता है या फिर स्वर्ग के अनन्त जीवन में जाता है। और जब तक पृथ्वी पर हमारा जीवन है तब तक हमारे पास चुनाव करने का अवसर है। परमेश्वर ज़बरदस्ती न तो किसी को नरक में भेजता है और न ही वह किसी को स्वर्ग में भेजता है। उसने तो मनुष्य के ऊपर केवल अपनी इच्छा प्रकट की है। चुनाव मनुष्य को स्वयं ही करना है।

किन्तु, जो लोग परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार करके उसे मानते हैं, वे जानते हैं कि इस जीवन के बाद वे उसके पुत्र, उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के कारण उसके स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। पर जो लोग स्वयं अपनी ही इच्छा पर चलकर अपना जीवन व्यतीत

करते हैं वे उसी के अनुसार अपना प्रतिफल भी पाएंगे। और मैंने आज फिर से आपको परमेश्वर का सुसमाचार बताया है। चुनाव और फ़ैसला तो आप ही के हाथ में है। पर मेरी परमेश्वर से यही प्रार्थना रहेगी कि वह आपको सुबुद्धि दे। अर्थात् आप उसके सुसमाचार को मानकर उसके स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के योग्य बन जाएं।

बाइबल से हम क्या सीखते हैं?

बाइबल से एक बड़ी ही आवश्यक बात हमें सीखने को यह मिलती है, कि संसार में हम सब का केवल एक ही परमेश्वर है। और वह परमेश्वर एक सच्चा और ज़िन्दा परमेश्वर है। उसी ने सारी सृष्टि की रचना की है। और, केवल उसी की आराधना - उपासना हम सब को करनी चाहिए। उसी परमेश्वर ने अपने आपको, जगत की हर वस्तु के द्वारा, जिन्हें उसने बनाया है, मनुष्यों पर प्रकट किया है। उसने संसार में सब लोगों के लिये अपनी इच्छा को भी प्रकट किया है। अर्थात्, हम सब परमेश्वर की इच्छा को जान सकते हैं! बाइबल परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन है। बाइबल में परमेश्वर ने अपनी इच्छा को सारे जगत के सब लोगों के लिये व्यक्त किया है। यानि बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। और इसीलिये, हम सब के लिये यह जानना बड़ा ही आवश्यक है, कि बाइबल में क्या लिखा है? बाइबल क्या कहती है? परमेश्वर आज भी लोगों से बोलता है। लेकिन वह कैसे बोलता है? केवल बाइबल में लिखी हुई बातों के द्वारा। परमेश्वर ने अपनी सारी और सम्पूर्ण इच्छा को सारे संसार के सब लोगों के लिये बाइबल में, बाइबल के द्वारा, प्रकट कर दिया है।

संसार में अनेकों अच्छे-अच्छे शिक्षक हो सकते हैं। परन्तु परमेश्वर से जो हमें सीखने को मिलता है, या जिन बातों को परमेश्वर हमें सिखाना चाहता है, उन के बारे में हम केवल बाइबल में ही पढ़ सकते हैं। इसी तरह से, संसार में बहुत सी अच्छी-अच्छी बातें सिखानेवाली पुस्तकें भी हो सकती हैं। लेकिन परमेश्वर की

इच्छा को जानने के लिये हमें बाइबल में से पढ़ने की और बाइबल में से सुनने की ज़रूरत है। यानि बाइबल का स्थान न तो कोई इन्सान ले सकता है और न ही कोई अन्य पुस्तक ले सकती है। सो, बाइबल से हम क्या सीखते हैं?

बाइबल से हमें यह सीखने को मिलता है: कि परमेश्वर परम-आत्मा है। और वह सदा से है और सदा रहेगा। उसी ने सारे संसार को बनाया है। और उसने आरंभ में मनुष्य को अपने आत्मिक स्वरूप पर और अपनी पवित्र समानता पर बनाया था। लेकिन मनुष्य ने अपनी इच्छा से पाप का मार्ग चुनकर स्वयं अपने आप को परमेश्वर से अलग कर लिया था। कभी-कभी लोग यह सवाल उठाते हैं, कि क्यों परमेश्वर ने मनुष्य को पाप करने की अनुमति दी? या, परमेश्वर ने मनुष्य को पाप करने से क्यों नहीं रोका? किंतु हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए, कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप पर बनाया है। अर्थात् मनुष्य के पास परमेश्वर की ही तरह समझ और बुद्धि है। मनुष्य जानता है, कि गलत क्या है और सही क्या है। मनुष्य स्वयं चुनाव कर सकता है कि वह क्या करना चाहता है और क्या नहीं करना चाहता है। परमेश्वर की ही तरह मनुष्य के पास विवेक भी है। आरंभ में परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी इच्छा तो अवश्य बताई थी। पर मनुष्य को उसकी सोच-समझ के अनुसार चुनाव करने की शक्ति भी दी थी। और जैसे कि आज, मनुष्य परमेश्वर की इच्छा पर न चलकर स्वयं अपनी ही इच्छा के अनुसार चल रहा है। वैसे ही आरंभ में भी मनुष्य ने परमेश्वर की इच्छानुसार न चलकर स्वयं अपनी की इच्छानुसार चलने का चुनाव किया था।

इसलिये, बाइबल में लिखा है, कि सबने पाप किया है और सब परमेश्वर की पवित्राता के स्तर से नीचे गिर गए हैं। इसका अर्थ यह है, कि स्वयं अपने ही अधर्म के कामों के कारण, पाप

और बुराई के कारण हर एक मनुष्य परमेश्वर से अलग है। हज़ारों और लाखों लोग प्रतिदिन इस दुनिया से चले जाते हैं। क्योंकि बाइबल कहती है कि परमेश्वर ने ही सब इन्सानों के लिये यह ठहराया है, कि सब एक न एक दिन अवश्य मरें। पर मरने के बाद मनुष्य कहां जाता है? मनुष्य की आत्मा अमर है। मनुष्य की आत्मा परमेश्वर की ही तरह हमेशा विद्यमान रहेगी। क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने आत्मिक स्वरूप पर बनया है। जैसे कि शारीरिक संसार है, जिसमें शारीरिक लोग रहते हैं, वैसे ही आत्मिक संसार भी है, जिसमें आत्माएं रहती हैं। लेकिन जिस प्रकार से शारीरिक संसार में अच्छे और बुरे दोनों ही तरह के लोग एक साथ रहते हैं। उस तरह से आत्मिक संसार नहीं है। क्योंकि बाइबल हमें बताती है, कि उस आत्मिक संसार में, अर्थात् जहां आत्माएं रहती हैं, रहने के दो अलग-अलग स्थान हैं। जिनमें से एक को स्वर्ग कहा जाता है और दूसरे को नरक। स्वर्ग वह स्थान है जहां परमेश्वर है। और नरक वह स्थान है जहां परमेश्वर नहीं है। इसीलिये, बाइबल में, जबकि स्वर्ग को तो आत्मिक आनंद का अनंत-लोक कहा गया है; नरक को बाइबल एक अनंत-आग ही झील और हमेशा के अंधकार का लोक कहकर सम्बोधित करती है।

प्रत्येक मनुष्य को, इसीलिये, इस जीवन में एक बड़ा ही चुनाव करना है। और वह चुनाव यह करना है, कि इस जीवन की समाप्ति पर जब वह इस धरती से हमेशा के लिए जाएगा तो वह कौन से स्थान पर जाकर रहना चाहता है! परमेश्वर किसी को भी न तो स्वर्ग में भेजता है, और न नरक में भेजता है। जिस तरह से, हर एक इन्सान स्वयं अपनी ही इच्छा से पाप के मार्ग पर चलकर परमेश्वर से अलग होता है। उसी तरह हर एक इन्सान को खुद अपने लिये चुनना है, कि वह इस जगत के जीवन के बाद कहां

जाकर रहना चाहता है।

जबकि परमेश्वर ऐसा बिल्कुल नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य नरक में प्रवेश करे। पर वह किसी को भी ज़बरदस्ती नरक में जाने से नहीं रोकता। वह हम सब का स्वर्गीय पिता है। वह हम सब से प्रेम करता है। उस ने हम सब को पाप से छुटकारा पाने का एक मार्ग दिया है। आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व मनुष्य का पाप से उद्धार करने के लिये परमेश्वर पृथ्वी पर भी आया था। प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर का प्रतिरूप था। वह स्वयं अपनी ही इच्छा से जगत में आया था। उसी ने यह होने दिया था, कि वह स्वयं ही कुछ मनुष्यों की ईर्ष्या का निशाना बन जाए। ताकि वह पकड़वाया जाए। और झूठे दोषों के आधार पर मृत्यु दन्ड पाने के योग्य समझा जाए। बाइबल में लिखा है, कि जिसमें कोई पाप और दोष नहीं था, उसी को परमेश्वर ने पापी मान लिया था, ताकि वही अपनी मृत्यु के द्वारा सारे जगत के सब लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित बन जाए। सो प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर की दृष्टि में, आपके और मेरे और सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। उसमें होकर, उसके द्वारा हम परमेश्वर के पास, उसके स्वर्ग में जाने के योग्य बन जाते हैं। पर यह कैसे होता है?

बाइबल कहती है, कि जब कोई भी व्यक्ति यीशु मसीह में विश्वास लाता है कि वह मेरे पापों के बदले में मारा गया था; और अपना मन फिराकर स्वयं पाप के लिये मर जाता है; और अपने पापों की क्षमा पाने के लिये, यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेने के द्वारा पानी के भीतर गाड़े जाकर उसमें से बाहर आता है; और प्रतिदिन अपना जीवन यीशु मसीह के जीवन के आदर्शों पर चलकर बिताता है; तो वह अपनी इच्छानुसार न चलकर, परमेश्वर की इच्छानुसार चलता है। और परमेश्वर की इच्छा पर चलकर वह स्वर्ग में प्रवेश करके परमेश्वर के साथ

रहने के योग्य बन जाता है। सो इस प्रकार परमेश्वर हम सब को स्वर्ग में हमेशा का जीवन देना चाहता है। पर यह चुनाव हम सब को स्वयं ही करना है। परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता। वह हम सब से प्रेम करता है। वह हम सब को स्वर्ग में देखना चाहता है। पर उसने हम सब को चुनाव करने की शक्ति भी दी है। क्या आप परमेश्वर की इच्छा का पालन करके आज अपने आप को उसे देना चाहते हैं?

बाइबल के दो नियम

इस समय मैं आपके सामने बाइबल की कुछ मुख्य शिक्षाओं को रखना चाहता हूं। लेकिन सबसे पहले तो हम यह देखें, कि बाइबल क्या है? बाइबल शब्द का अर्थ है, एक पुस्तक। परन्तु बाइबल परमेश्वर के वचन की एक पुस्तक है। अर्थात् बाइबल में वे बातें लिखी हुई हैं, जिन्हें परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है। बाइबल में छियासठ पुस्तके हैं, जो अलग-अलग नामों से जानी जाती हैं। ये सभी छियासठ पुस्तकें दो मुख्य भागों में बंटी हुई हैं। इसके पहले भाग में उन्तालिस किताबें हैं – और इन्हें पुराना नियम कहा जाता है। और दूसरे भाग में सत्ताईस किताबें हैं – जिन्हें नया नियम कहा जाता है। "नियम" शब्द का अर्थ है व्यवस्था या कानून। सबसे पहले जिस नियम या व्यवस्था को परमेश्वर ने दिया था, उसमें परमेश्वर ने यह दर्शाया था, कि उसने किस प्रकार से आरम्भ में सारी दुनिया की सृष्टि की थी। उसमें परमेश्वर ने दर्शाया था कि उसने आरंभ में मनुष्य को कैसे बनया था। और किस प्रकार मनुष्य पाप करके परमेश्वर से दूर और अलग हो गया था। लेकिन क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर ने बनाया था, और परमेश्वर ने मनुष्य को एक आत्मिक प्राणी बनाया था। इसलिये परमेश्वर ने मनुष्य को पाप से बचाकर अपने स्वर्ग में अनंत जीवन देने की एक योजना को तैयार किया था। अपनी उसी योजना को पूरा करने के लिये, परमेश्वर ने लोगों की एक विशेष जाति बनाई थी, और उस जाति के द्वारा परमेश्वर पृथ्वी पर एक मुक्तिदाता अर्थात् उद्धारकर्त्ता को लाना चाहता था। पुराने नियम की अधिकांश बातें उसी जाति से संबंध रखती हैं।

पर जब समय पूरा हुआ, यानि जब परमेश्वर ने उचित समझा,

तो उसी विशेष जाति में, परमेश्वर की इच्छा से एक बालक का जन्म हुआ। और वही बालक, परमेश्वर के कहे अनुसार, यीशु मसीह कहलाया – अर्थात् "परमेश्वर द्वारा ठहराया हुआ उद्धारकर्त्ता।" यीशु मसीह का जन्म मनुष्यों के बीच में हुआ था, परन्तु वह परमेश्वर का पुत्र था! क्योंकि वह उसी की मनसा से और उसी की सामर्थ से पैदा हुआ था। यीशु मसीह ने बड़ी-बड़ी महान शिक्षाएं दी थीं, और बड़े-बड़े सामर्थपूर्ण आश्चर्य के काम किये थे। इस सभी के बारे में हम बाइबल के नए नियम में पढ़ते हैं। नए नियम को इसीलिये "प्रभु यीशु मसीह का नया नियम" कहा जाता है। उसी नए नियम में हम पृथ्वी पर के प्रभु यीशु मसीह के अद्‌भुत जन्म और पवित्र जीवन के बारे में भी पढ़ते हैं। बाइबल में लिखा है, कि जब प्रभु यीशु मसीह का नया नियम उसके पवित्रात्मा की प्रेरणा द्वारा लिखवाया जाकर लोगों के हाथों में आ गया था, तो परमेश्वर का पहला नियम पुराना नियम हो गया था। (इब्रानियों 8:13; तथा 9:15, 16; कुलुस्सियों 2:14)। अर्थात् अब लोगों को उसमें लिखी आज्ञाओं को मानने की कोई आवश्यकता नहीं रहीं। क्योंकि उसके स्थान पर हमें परमेश्वर ने अब नया नियम दे दिया है। जो कि उस पहलेवाले से भी अच्छा और उत्तम है।

बाइबल का नया नियम हमें बताता है कि, प्रभु यीशु मसीह ने पृथ्वी पर आकर पुराने नियम में लिखी बातों को पूरा किया था। वह जगत के पापों का प्रायश्चित करने को बलि के एक मेम्ने की तरह बलिदान किया गया था। फिर उसके समय के लोगों ने उसे अपनी रीति के अनुसार एक कब्र में दफ़ना दिया था। पर यीशु, परमेश्वर का पुत्र, फिर से ज़िन्दा होकर कब्र में से बाहर आ गया था। इसके बाद, वह चालीस दिनों तक ज़मीन पर रहा था। और फिर वह स्वर्ग पर वापस उठा लिया गया था। पर स्वर्ग पर उठा लिये जाने से पहले यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा देकर सारे जगत

में भेजा था, और कहा था, कि परमेश्वर का यह सुसमाचार सब जगह जाकर सब लोगों को दो: क्योंकि परमेश्वर जगत के सब लोगों से प्रेम करता है, और इसका प्रमाण यह है कि उसने सारे जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के उद्देश्य से अपने एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया है। और उसने अपने चेलों से यह भी कहा था, कि जो लोग इस सुसमाचार को सुनकर विश्वास लाएं, उन्हें आज्ञा दो, कि वे अपना-अपना मन फिराएं, और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें। (यूहन्ना 3:16; मरकुस 16:15-16; प्रेरितों 2:38)। नया नियम हमें यह सिखाता है, कि जिस तरह से परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह परमेश्वर की इच्छा से हमारे पापों के लिये मारा गया था, और जैसे वह गाड़ा गया था और कब्र में से बाहर आकर फिर जी उठा था। वैसे ही हर एक मनुष्य को अपना मन फिराकर पाप के लिये मरना चाहिए और फिर बपतिस्मा लेने के द्वारा पानी के भीतर गाड़े जाकर उसमें से बाहर आना चाहिए।

जब कोई भी जन ऐसा करता है तो उसका नया जन्म हो जाता है। और वह मसीह का एक अनुयायी बन जाता है, और मसीह उसे अपनी कलीसिया में मिला लेता है। कलीसिया परमेश्वर के उन लोगों की एक मंडली है जिन्होंने मसीह में होकर उसके द्वारा अपने पापों से उद्धार पाया है। नया नियम हमें सिखाता है, कि परमेश्वर अपने लोगों से किस तरह की उपासना की उपेक्षा रखता है; और किस तरह के जीवन उसके लोगों को पृथ्वी पर बिताने चाहिएं। नए नियम की सत्ताईस किताबों में से इक्कीस किताबों को केवल मसीही लोगों को ही लिखा गया है, यह बताने के लिये कि परमेश्वर अपने उद्धार पाए हुए लोगों से पृथ्वी पर क्या चाहता है।

एक दिन, नया नियम हमें बताता है, यीशु मसीह फिर से वापस आएगा। उस दिन वह सारे जगत के सब लोगों का न्याय

करने को आएगा। जिन लोगों ने परमेश्वर की इच्छा पर चलकर मसीह के द्वारा मुक्ति पाई है, और अपना जीवन उस में रहकर बिताया है; उन्हें मसीह अपने साथ ले जाएगा, ताकि वे उसके साथ उसके स्वर्ग में हमेशा रहें।

नया नियम हमें यह भी बताता है कि यीशु मसीह जब न्याय करने को आएगा तो वह इस पृथ्वी पर नहीं आएगा। पर उसके सब लोग उसकी सामर्थ से फिर से ज़िन्दा हो जाएंगे। और वे पल भर में उसी के समान आत्मिक रूप में बदल जाएंगे। और वे सब उसकी सामर्थ से ऊपर उठा लिये जाएंगे, और वे आकाश में प्रभु से मिलेंगे, और उसके साथ स्वर्ग में प्रवेश करने के लिये चले जाएंगे। पर शायद आप पूछें कि इस पृथ्वी का क्या होगा? नए नियम के अनुसार, पृथ्वी और जो कुछ उसमें है वह सब जलकर नाश हो जाएगा। एक जगह, नए नियम में इस प्रकार लिखा हुआ है: "तो जब कि ये सब वस्तुएं इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए? और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिये; जिसके कारण आकाश आग से पिघल जाएंगे, ओर आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे। पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं, जिनमें धार्मिकता वास करेगी।" (2 पतरस 3:11-13)।

सो मेरा एक बार फिर से आपसे आग्रह और निवेदन है, कि अगर आपने अभी तक भी प्रभु यीशु में विश्वास लाकर और अपना मन फिराकर और उसमे बपतिस्मा लेकर उसके द्वारा उद्धार प्राप्त नहीं किया है, तो आप जल्दी ही ऐसा करेंगे। और इन बातों के बारे में यदि हम आपकी कोई सहायता कर सकते हैं, तो हमें ज़रूर लिखकर सूचित करें।

मनुष्य धर्मी कैसे बनता है?

हम सब इस बात से परिचित हैं, कि पृथ्वी पर सभी मनुष्यों की कुछ आवश्यकताएं ऐसी हैं जो एक ही सी हैं। जैसे कि, हमें भूख और प्यास मिटाने के लिये भोजन और पानी की आवश्यकता है; हमें हवा और जिंदा रहने के लिये सांस लेने की आवश्यकता है। पर क्या आप जानते हैं कि संसार में प्रत्येक मनुष्य को मुक्ति या उद्धार की भी आवश्यकता है? क्या आप जानते हैं कि आपको भी मुक्ति पाने की ज़रूरत है? क्या होता है, जब इन्सान को भोजन, और पानी और हवा नहीं मिलती? हम सब जानते हैं कि इन चीज़ों के बिना मनुष्य शारीरिक रूप से ज़िन्दा नहीं रह सकता। ऐसे ही, मित्रो, मुक्ति के बिना भी मनुष्य आत्मिक रूप से ज़िन्दा नहीं रह सकता। जैसे कि पृथ्वी पर मनुष्य है, वैसे ही ज़मीन पर पाप भी है। जहां मनुष्य है, वहीं पाप भी है। और जहां पाप है वहां मनुष्य है। अर्थात् पृथ्वी पर कोई ऐसी जगह नहीं है जहां मनुष्य है पर पाप नहीं है! आज संसार में हर एक इन्सान पाप के बन्धनों में जकड़ा हुआ है। पाप ने मनुष्य को ठीक उसी तरह से अपना दास बना रखा है, जैसे कि आज से लगभग 3500 वर्ष पूर्व मिस्त्र के लोगों ने इसराएलियों को अपना दास बना रखा था। परन्तु क्या आप पाप की गुलामी को, यानि पाप के दासत्व को अनुभव करते हैं?

इसराएलियों के बारे में बाइबल में लिखा है, कि जब उन्होंने अपनी गुलामी की दुर्दशा पर ध्यान दिया था, तो वे मुक्ति के लिये

चिल्ला उठे थे! और कितना ही भला हो यदि आज ज़मीन पर हर एक इन्सान अपनी आत्मा के दासत्व को महसूस कर सके! क्योंकि आत्मा ही तो वास्तविक मनुष्य है। शरीर तो नाशमान है। परन्तु आत्मा अमर है। क्योंकि आत्मा परमेश्वर का स्वरूप है। उसका अस्तित्व कभी मिटेगा ही नहीं। और सच्चाई यह है, कि पाप ने हर एक इन्सान को अपना दास बना रखा है! प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने के लिये ही अपना जीवन जी रहा है। अपनी अमर आत्मा की चिन्ता मनुष्य को है ही नहीं! तौभी बाइबल में परमेश्वर ने हमें बताया है कि प्रत्येक मनुष्य जो अपने पापों से मुक्ति प्राप्त किये बिना ही इस संसार से चला जाता है, वह मृत्यु के बाद अपने आपको अधोलोक की आग की जलती हुई लपटों में और पीड़ाओं में पाता है। जी हां, मैंने कई बार सुना है, और अभी भी सुन रहा हूं, कि इस ज़मीन पर बहुतेरे लोग इन बातों को, और इस सच्चाई को सुनकर ठट्ठों में उड़ाते हैं। लेकिन, यह परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखी एक सच्चाई है! प्रभु यीशु ने कहा था, कि "ये" अर्थात् अधर्मी, "अनन्त दन्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" (मत्ती 25:46)।

परन्तु, अधर्मी कौन है? इस प्रश्न का उत्तर यह है, कि, पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य पाप के भीतर अधर्मी है। धर्मी केवल परमेश्वर है, क्योंकि परमेश्वर में कोई पाप नहीं है। इसीलिये, जहां परमेश्वर है उस स्थान को स्वर्ग कहते हैं। क्योंकि स्वर्ग में कोई पाप नहीं है। और क्योंकि पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य अधर्मी है, इसीलिये कोई भी इन्सान परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य नहीं है। सो यह मनुष्य की एक बहुत बड़ी और गम्भीर समस्या है। प्रत्येक मनुष्य के सामने आज एक यह बहुत बड़ा सवाल है कि "उद्धार पाने

के लिये मैं क्या करूं?" "मैं धर्मी कैसे बन सकता हूं?" "मुझे पाप से मुक्ति कैसे मिल सकती है?" सभी अन्य बातों को छोड़कर आज सबसे पहले हर एक इन्सान को इसी बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है। क्योंकि मनुष्य पापी है। मनुष्य अपने शरीर की अभिलाषाओं का बन्दी है। परमेश्वर ने अपनी पुस्तक बाइबल में सभी मनुष्यों के बारे में कहा है: कि सबने पाप किया है! (रोमियों 3:23)। और, फिर, यह, कि, पाप की मजदूरी मृत्यु है। (रोमियों 6:23)। मृत्यु! जी हां! मृत्यु! अर्थात् परमेश्वर के बिना, सदा के लिये उस से अलग रहकर अनन्तकाल में उस स्थान पर रहना जहां हमेशा का रोना और दांतों को पीसना होगा! वह स्थान जिसे नरक कहा जाता है! जहां अनन्त विनाश, और अनन्त दंड, और अनन्त अंधकार होगा!

क्या हम इस ज़मीन पर सदा बने रहेंगे? क्या यहां से हम कभी जाएंगे नहीं? हम सब यह जानते हैं, कि हमारा जीवन कभी भी समाप्त हो सकता है। हमारा जीवन पृथ्वी पर घास की तरह है, जो कुछ समय तक तो हरी रहती है, पर कुछ समय के बाद सूखकर खत्म हो जाती है! हम यह जानते हैं, कि हमारा शारीरिक, पृथ्वी पर का जीवन पानी के बुलबुलों और भाप के समान है, जो कुछ समय के लिये तो दिखाई देते हैं पर फिर लुप्त हो जाते हैं। फिर क्यों नहीं हम अपनी आत्माओं की चिन्ता करते? क्यों नहीं हम इस बात पर ध्यान देते कि उस आत्मिक संसार में, जहां हम सब को हमेशा के लिये जाकर रहना है, हम कहां रहेंगे? हमें केवल कुछ वर्षों के वर्तमान की चिन्ता है। पर अनन्तकाल के विषय में हम कुछ नहीं सोचते। लोगों को अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की चिन्ता है। पढ़ाई-लिखाई, नौकरी और शादी-ब्याह की चिंता है। अनेकों लोग राजनीति में लगे हुए हैं। कुछ कला का पीछा

कर रहे हैं। पर सब को केवल अपने-अपने शरीरों की ही चिन्ता है!

किन्तु, केवल परमेश्वर को ही हमारी आत्माओं की चिन्ता है। क्योंकि केवल वही, जिसने इन्सान को बनाया है, हमारी आत्मा के मूल्य को, और उसके विशाल महत्व को, और उसकी वर्तमान और आनेवाली परिस्थिति को जानता है। इसीलिये तो उसने ऐसा महान बलिदान दिया है! क्योंकि वह नहीं चाहता, कि कोई भी मनुष्य अपने पाप और अधर्म के कारण नाश हो। वह मनुष्य से प्रेम करता है। वह मनुष्य को पाप के दन्ड से बचाना चाहता है। वह प्रत्येक मनुष्य को स्वर्ग में देखना चाहता है। और यदि मनुष्य को स्वर्ग में जाने से कोई भी वस्तु रोकती है, तो वह है पाप, अधर्म। परन्तु परमेश्वर ने सारे जगत से ऐसा प्रेम किया है, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया है, ताकि जो कोई उस में विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।

जैसे कि हज़ारों वर्ष पूर्व परमेश्वर ने मिस्त्र में मूसा को भेजा था। और उसके द्वारा इसराएलियों को उनकी गुलामी से रिहाई दिलाई थी। ऐसे ही परमेश्वर ने अपने वचन को एक मनुष्य के रूप में स्वर्ग से पृथ्वी पर भेजा था, ताकि उसके द्वारा सारा जगत उद्धार पाए, और सब लोगों को पापी से पवित्र और अधर्मी से धर्मी बनने का अवसर मिल जाए।

बाइबल में लिखा है, कि, जो पाप से अज्ञात था, अर्थात् यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, उसी को परमेश्वर ने सारे जगत के स्थान पर पाप ठहराया, ताकि हम सब उसे में होकर परमेश्वर के निकट उसके लेखे में धर्मी बन जाएं। परमेश्वर की दृष्टि मे यीशु मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित और हमारा उद्धारकर्त्ता है। क्योंकि वह हमारे पापों के लिये दन्डित किया गया था। क्योंकि परमेश्वर हमें

पाप के दंड से मुक्त करके स्वर्ग में हमेशा का जीवन देना चाहता है।

पर यह अर्थात्, ऐसा कब होता है? ऐसा तब होता जब कोई जन मसीह में सारे मन से विश्वास लाता है, कि वह परमेश्वर का पुत्र है, और मेरे पापों के बदले में मारा गया था; और फिर सांसारिक बातों से अपना मन फिराता है; और अपने वर्तमान जीवन को मसीह की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेकर, जल-रूपी-कब्र के भीतर दफ़ना देता है। फिर वह जन एक नए जीवन की चाल चलता है – वह नया जीवन जो उसे मसीह में मिलता है। (रोमियों 6:1.6,17,18)

आपको फिर से जन्म लेने की आवश्यकता है

बाइबल की मुख्य शिक्षाओं में से एक बड़ी ही प्रमुख शिक्षा यह है कि हर एक मनुष्य को नए सिरे से जन्म लेने की आवश्यकता है। प्रभु यीशु मसीह ने शिक्षा देकर कहा था, कि जब तक कोई व्यक्ति नए सिरे से नहीं जन्मेगा तो वह परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। इसका अर्थ क्या है? किस तरह से एक मनुष्य फिर से जन्म ले सकता है? शारीरिक दृष्टिकोण से तो यह बात बिल्कुल असंभव है। पर इस बात का जवाब देकर प्रभु यीशु ने कहा था, कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। (यूहन्ना 3:3, 5)।

इसका अर्थ क्या है? किस तरह से एक इन्सान जल और आत्मा से जन्म लेकर, नए सिरे से, पैदा हो सकता है? इसका मतलब यह है, कि जब कोई इन्सान परमेश्वर के वचन को सुनता है; उसका वह वचन जिसे उस के पवित्रात्मा की प्रेरणा से बाइबल में लिखा गया था। और उसके आत्मा के वचन को सुनकर अपने मन में उसे ग्रहण करता है, और जो वह कहता है उस पर अमल करता है, तो इस प्रकार उस मनुष्य का आत्मा से जन्म होता है। पर जल से मनुष्य का जन्म कब होता है? जल से मनुष्य का जन्म तब होता है जब वह बपतिस्मा लेने के द्वारा पानी में गाड़ा जाता है और उसमें से बाहर आता है। इसी बात को प्रभु यीशु मसीह

ने एक दूसरी जगह पर बाइबल में इस तरह से कहा था, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस 16:16)। ऐसे ही, जब सबसे पहली बार प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को सुनकर, उसके चेलों से लोगों ने पूछा था, कि "अब हम क्या करें?" तो उन्होंने उन्हें जवाब देकर कहा था, कि तुम में से हर एक अपना-अपना मन फिराए, और फिर अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले। (प्रेरितों 2:37, 38)। और लिखा है, बाइबल में कि उस दिल लगभग तीन हज़ार लोगों ने परमेश्वर का वचन मानकर बपतिस्मा लिया था। और प्रभु ने उन सब को अपनी कलीसिया में, यानि अपने उद्धार पाए हुए लोगों की मंडली में मिला लिया था। (प्रेरितों 2:47)। क्योंकि उनका नया जन्म हुआ था। उन्होंने परमेश्वर के पवित्रात्मा की बात मानकर जल में बपतिस्मा लिया था। और इस प्रकार उनका जन्म नए सिरे से हुआ था। बाइबल में लिखा है, कि तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहन लिया है। और जो इन्सान मसीह में है, बाइबल कहती है, वह एक नया इन्सान है। (गलतियों 3:27; 2 कुरिन्थियों 5:17)।

क्या आपने नए सिरे से जन्म लिया है? क्या आपका जन्म जल और आत्मा से हुआ है? यदि नहीं, तो आपको इस बात पर ध्यान देने की ज़रूरत है। क्योंकि उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु ने ही यह कहा था, कि यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता; और जो जल और आत्मा से नहीं जन्मेगा वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। यदि इस बारे में मैं आपकी कोई सहायता कर सकता हूं, तो मुझे जानकर बड़ी ही खुशी होगी। मुझे लिखकर बताएं। मैं इस बात का इन्तज़ाम करने की कोशिश करूंगा, कि जहां भी आप हैं, आप परमेश्वर की इच्छा को मानकर नया जन्म पाएं। क्योंकि यह बात बड़ी ही

गम्भीर है। क्योंकि गरीब और बीमार होते हुए भी एक इंसान परमेश्वर के राज्य में दाखिल हो सकता है। बिना पढ़े-लिखे और बिना किसी योग्यता के भी कोई मनुष्य परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकता है। भूखा और प्यासा रहकर भी एक व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में प्रवेश पा सकता है। पर यदि कोई नए सिरे से न जन्मे, और जल और आत्मा से न जन्मे तो न तो वह परमेश्वर का राज्य देख सकता है, और न उसमें प्रवेश कर सकता है। इसीलिये मैंने कहा, कि यह एक बड़ी ही अहम और गम्भीर बात है। और वास्तव में इस से बड़ी, अहम, और गम्भीर और महत्वपूर्ण बात पृथ्वी पर और कोई है ही नहीं।

और इस बात का एक दूसरा भी पहलू है: अर्थात्, नया जीवन! जो लोग परमेश्वर के वचन की बात मानकर जल और आत्मा से नया जन्म प्राप्त कर लेते हैं, उनसे परमेश्वर एक नए जीवन की आशा रखता है। यानि वह जीवन पहले का सा जीवन नहीं होना चाहिए। बाइबल का लेखक इस बात को कुछ इस तरह से कहता है: कि, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय ही उसके जी उठने की समानता में भी उसके समान हो जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए। ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा। सो यदि हम मसीह के साथ मर गए, (यानि, पाप से मन फिराकर, पाप के लिये मर गए), तो हमारा विश्वास

यह भी है कि उसके साथ जीएंगे भी। क्योंकि हम यह जानते हैं, कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं, और उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होगी। क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक बार ही मर गया; परन्तु जो जीवित है तो परमेश्वर के लिये जीवित है। ऐसे ही तुम भी, अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परंतु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो। इसलिये, पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तु उसकी लालसाओं के आधीन रहो। और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो। पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो; और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो।" (रोमियों 6:3-13)।

इसलिये, हे भाइयो, बाइबल का लेखक आगे कहता है, "मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए।" (रोमियों 12:1-2)।

सो जल और आत्मा से जन्म लेकर इंसान एक नया मनुष्य बन जाता है। मसीह में होकर, मसीह का अनुयायी बनकर, वह मनुष्य पृथ्वी पर हर एक बात को उसी के नज़रिए से देखता है। उस की बुद्धि, यानि, सोच-विचार बदल जाते हैं। उसका चाल-चलन बदल जाता है। उसका मन और दृष्टिकोण बदल जाता है। अब वह उन बुरे कामों को नहीं करता जिन्हें वह पहले करता था। पर अब वह ऐसे काम करता है जिन से परमेश्वर प्रसन्न होता है। अब वह सब से प्रेम रखता है। हां, अपने दुश्मनों से भी प्रेम करता है, और उनके लिये परमेश्वर से प्रार्थना करता है। क्योंकि मसीह

यीशु ने भी ऐसा ही किया था।

पर, अब अंत में, इस बात पर ध्यान दें, कि मान लें कि आज पृथ्वी पर हर एक इन्सान परमेश्वर की बात मानकर नए सिरे से जन्म ले ले तो इस बात की कल्पना करके देखें कि यह संसार कैसा एक नया संसार हो जाएगा! लेकिन आप अपने बारे में क्या सोचते हैं? क्या आप उस नए जीवन को अपने ऊपर धारण करना चाहते हैं जो न केवल आपके पृथ्वी पर के वर्तमान जीवन को ही बदल सकता है, पर आपके आनेवाले अनन्तकाल के जीवन को भी एक स्वर्गीय जीवन में बदल देगा?

एक दिन सभी मरे हुए जी उठेंगे

बाइबल की एक बड़ी ही खास और महत्त्वपूर्ण शिक्षा यह भी है: कि एक दिन सभी मरे हुए फिर से जी उठेंगे।

प्रभु यीशु मसीह ने एक जगह यूं कहा था: कि इस बात से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है जबकि सभी मरे हुए जी उठेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे, और जिन्होंने बुराई की है वे दन्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे। (यूहन्ना 5:28-29)। प्रभु यीशु ने कहा था, कि यह बात सुनकर अचम्भा मत करो! क्योंकि यह बात ही ऐसी है, जिसे सुनकर लोग आश्चर्य करते हैं! लोगों को इस बात पर विश्वास नहीं होता। लोग कहते हैं, कि यह कैसे हो सकता है? पर बाइबल कहती है, कि:

अब कोई यह कहेगा, कि मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं, और कैसी देह के साथ जी उठते हैं? हे निर्बुद्धि, बाइबल कहती है, जो कुछ तू बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता। और जो तू बोता है, यह वह देह नहीं जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु निरा दाना! सो, बात तो आश्चर्य की है, पर बात बिल्कुल सच भी है! और यह ऐसी बात है, जिसका इन्कार नहीं किया जा सकता। क्योंकि इसे हम अपनी आंखों से प्रतिदिन देखते हैं। यह एक ऐसी सच्चाई है, जिस के हम सब गवाह हैं! मरे हुए दाने, और बीज, और गुठलियां ज़मीन में गाड़े या बोए जाते हैं – हम खुद उन्हें भूमि में दबाते हैं। पर कुछ ही समय के बाद उन्हीं सूखे

हुए दानों या बीजों में से एक नई देह, एक नए रूप और आकार में, फूटकर ज़मीन में से बाहर निकलती है! उसमें जीवन होता है! उसमें सुंदरता होती है! उसमें शक्ति होती है! पर बात तो यह है कि उन मरे हुए दानों को, या बीजों को और गुठलियों को, वह एक नया रूप और जीवन कौन देता है? इन्सान तो उन्हें – हां, उन सूखे और मरे हुए दानों को, मिट्टी में दबा देता है। पर कुछ समय के बाद वे सब अपनी-अपनी नई देहों के साथ फिर से जी उठते हैं – ज़मीन के भीतर से बाहर आ जाते हैं! सो जब कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर उन मरे हुए दानों को एक नया जीवन और एक नई देह दे सकता है, तो क्या यही सामर्थ का काम वह हम इन्सानों के साथ नहीं कर सकता? और अगर नहीं कर सकता, तो क्यों नहीं कर सकता? क्या परमेश्वर से कुछ भी काम करना असम्भव है? वह, जिसने आरम्भ में मनुष्य को मिट्टी में से बनाया था, वही उसको मिट्टी में से फिर ज़िन्दा क्यों नहीं कर सकता? बाइबल में आगे लिखा है; सुनिये, लिखा है:

परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उस को देह देता है; और हर एक बीज को उसकी विशेष देह! क्योंकि सब शरीर एक सरीखे नहीं। परन्तु मनुष्यों का शरीर और है; पशुओं का शरीर और है। स्वर्गीय देह हैं, और पार्थिव देह भी है: परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और है, ओर पार्थिव देहों का और। सो मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। वह अनादर के साथ बोया जाता है, पर तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है और सामर्थ के साथ जी उठता है। स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है; जबकि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है। ऐसे ही लिखा भी है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात् आदम, जीवित प्राणी बना, और अन्तिम आदम, अर्थात् मसीह, जीवन

दायक आत्मा बना। परन्तु, पहले आत्मिक न था, पर स्वाभाविक था, इस के बाद आत्मिक हुआ। प्रथम मनुष्य धरती से, अर्थात् मिट्टी का था, पर दूसरा मनुष्य, यानि मसीह, स्वर्गीय है। और जैसा वह मिट्टी का था वैसे ही हम भी मिट्टी के हैं; और जैसे वह स्वर्गीय है, वैसे ही और भी स्वर्गीय होंगे। और जैसे कि हम ने उसका रूप जो मिट्टी का था, धारण किया है, वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे।

हे भाईयो, कहता है बाइबल का लेखक, मैं यह कहता हूं, कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश अविनाश का अधिकारी हो सकता है। देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे। और यह क्षण भर में पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाश दशा में उठाए जाएंगे, और हम सब बदल जाएंगे। क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान देह अविनाश को पहन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहन ले। और जब यह नाशमान अविनाश को पहन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहन लेगा, तब यह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया। हे मृत्यु तेरी जय कहां रही? हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। (1 कुरिन्थियों 15:35-57)। अर्थात्, यीशु मसीह में होकर हम मृत्यु पर जीत प्राप्त करने के लिए जी उठेंगे!

अर्थात्, जो लोग यीशु मसीह के द्वारा अपने पापों से उद्धार, यानि मुक्ति या छुटकारा प्राप्त करके इस दुनिया से चले जाते हैं, तो उनके पास यह आशा है, कि पुनरुत्थान के दिन जब वे जी उठेंगे तो वे जय प्राप्त करने के लिये यानि मौत पर जीत हासिल

करने के लिये अपनी नई और अमर और अविनाश देहों के साथ हमेशा के लिये जी उठेंगे। उस दिन वे सब परमेश्वर के सदा के राज्य में प्रवेश करने के लिये जी उठेंगे! लेकिन दूसरी ओर, जो लोग अपने पापों से उद्धार, यानि मुक्ति या छुटकारा पाए बिना इस संसार से चले जाते हैं, तो वे अपनी नई और अमर और अविनाश देहों के साथ नरक में हमेशा का दन्ड पाने के लिये पुनरुत्थान के दिन जी उठेंगे। प्रभु यीशु ने कहा था: "और ये अनन्त दंड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" (मत्ती 25:46)।

यानि पुनरुत्थान के दिन सभी लोग जी उठेंगे। वह दिन न्याय का दिन होगा! वह दिन परमेश्वर का दिन होगा! उस दिन के बाद कभी रात नहीं होगी, क्योंकि वह दिन हमेशा का दिन होगा! परन्तु, परमेश्वर का धन्यवाद हो, जैसे कि बाइबल का लेखक कहता है, कि वह हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जयवन्त करता है! क्योंकि हम जानते हैं, कि परमेश्वर के अनुग्रह से उसके पुत्र यीशु मसीह ने हमारे पापों का दन्ड स्वयं अपने ऊपर उठा लिया है। वह हमारे पापों का प्रायश्चित है। और क्योंकि हम उसमें हैं, इसलिये हमें हमारे पापों का दन्ड नहीं मिलेगा, क्योंकि उसने स्वयं अपनी मृत्यु के द्वारा हमारे पापों का दन्ड उठा लिया है। और, इसलिये, जब हम जी उठेंगे तो हम उसके द्वारा स्वर्ग में हमेशा का जीवन पाने के लिये जी उठेंगे। क्योंकि हमने उसमें अपने सारे मन से विश्वास किया है, और उसकी आज्ञा मानकर अपना मन फिराया है, और अपने पापों की क्षमा पाने के लिये बपतिस्मा लिया है। हम अपना जीवन उसमें रहकर, उसकी इच्छा पर चलकर व्यतीत करते हैं। और जब हम इस संसार से जाएंगे तो उसी में होकर जाएंगे! और, इसलिये हम सदा उसी के साथ रहेंगे! यही हमारी आशा है!

किन्तु क्या आप भी अपने बारे में ऐसा ही कह सकते हैं?

इस जीवन में आपकी क्या आशा है? जब पृथ्वी पर आपके जीवन का अंत होगा तो आप किस आशा के साथ यहां से जाएंगे? पुररुत्थान के दिन आप की क्या आशा होगी?

परन्तु, परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमे जयवन्त करता है! क्या आप पाप और मृत्यु के ऊपर जीत प्राप्त करना चाहते हैं? परमेश्वर चाहता है कि आप उसके पुत्र यीशु मसीह के पास आएं। उसमें विश्वास लाएं, और उसकी आज्ञा को मानकर उसे पहन लें, और उसी में होकर आपना जीवन पृथ्वी पर बिताएं, ताकि जब आप यहां से जाएं तो उसी में होकर जाएं, ताकि न्याय और पुनरुत्थान के दिन आप उसी में पाए जाएं।

एक मसीही कैसे बना जा सकता है?

यूं तो बाइबल में हम बहुत से लोगों के बारे में पढ़ते हैं। परन्तु सम्पूर्ण बाइबल में मुख्य रूप से हमारा ध्यान एक ही विशेष व्यक्ति के ऊपर दिलाया गया है। और उस व्यक्ति का नाम था "यीशु मसीह।" यीशु मसीह बाइबल का एक मुख्य विषय है। बाइबल में छियासठ पुस्तकें हैं। जबकि बाइबल की पहली पुस्तक हमें यह बताती है, कि जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया था, और मनुष्य पाप करके परमेश्वर से अलग हो गया था, तो परमेश्वर ने उसी समय प्रतिज्ञा करके कहा था, कि वह स्वर्ग से पृथ्वी पर एक मुक्तिदाता को भेजेगा। (उत्पत्ति 3:15)। दूसरी ओर, बाइबल की अंतिम पुस्तक में हमें यह बताया गया है, कि यीशु मसीह एक दिन सारे जगत के सब लोगों का न्याय करने को आएगा। (प्रकाशितवाक्य 22:12-21)।

यीशु मसीह के बारे में लिखकर बाइबल का एक लेखक उसे "वचन" कहकर संबोधित करता है। और कहता है, कि वह वचन जो सदा से परमेश्वर के साथ था और स्वयं परमेश्वर था; वही वचन परमेश्वर की सामर्थ से एक मनुष्य का रूप धारण करके स्वर्ग से पुथ्वी पर आ गया था, और इसलिए वही वचन पृथ्वी पर "परमेश्वर का एकलौता पुत्र" कहलाया था। (यूहन्ना 1:1, 2, 14, 18)।

यीशु मसीह का जन्म एक बड़े ही आश्चर्यपूर्ण ढंग से और

अद्‌भुत रीति से हुआ था। अर्थात् वह एक कुंवारी से पैदा हुआ था। और ऐसा आवश्यक भी था। क्योंकि मान लीजिए, यदि उसका जन्म सभी अन्य मनुष्यों की तरह ही होता, यानि सामान्य रूप से, तो क्या वह परमेश्वर का पुत्र कहलाता? दूसरी ओर, हम यह भी मानने से इंकार नहीं कर सकते कि यीशु मसीह का जन्म एक कुंवारी से हुआ था, क्योंकि हम मानते हैं, कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और उस से तो कोई भी काम असंभव नहीं है।

यीशु मसीह इस जगत में लोगों के बीच में लगभग तेंतिस वर्ष तक रहा था। उसका जन्म पलीस्तीन देश में हुआ था। उसका जीवन बड़ा ही अद्‌भुत था। पृथ्वी पर केवल एक ही ऐसा व्यक्ति हुआ है जिसने कभी कोई पाप नहीं किया था- और वह था यीशु मसीह। उसके जीवन का सारा इतिहास हमें बाइबल की पुस्तकों में मिलता है। वह एक साधारण मनुष्य की तरह इस ज़मीन पर लोगों के बीच में रहा था। वह सब बातों में वैसे ही परखा भी गया था जैसे कि हम सब के सामने परीक्षाएं आती हैं। पर उसने कभी कोई बुराई नहीं की थी। और ऐसा बड़ा ही ज़रूरी था। क्योंकि वह परमेश्वर की ओर से पृथ्वी पर एक बलिदान के रूप में आया था। उसके जीवन का बलिदान सारे जगत के सब पापों के प्रायश्चित के लिये होना था। लेकिन अगर उसी के जीवन में कोई पाप होता, तो वह जगत के पापों का प्रायश्चित कैसे बन सकता था?

यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु से पहले अपने लिए बारह चेलों को चुना था। और उन्हीं के साथ उसने जगह-जगह घूम-घूमकर अनेकों महत्वपूर्ण शिक्षाएं भी दी थीं। उसने सिखाया था, कि धन्य हैं वे लोग, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। और धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएंगे। धन्य हैं वे, यीशु ने कहा था, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के

अधिकारी होंगे। धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे। और धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन्हीं पर दया की जाएगी। धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। और धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के संतान कहलाएंगे। (मत्ती 5:3-9)। यीशु ने सिखाया था, कि तुम अपने बैरियों से प्रेम रखो, और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो, जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की संतान ठहरो। क्योंकि वह भले और बुरे दोनों के ऊपर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है। क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो। (मत्ती 5:43-48)। यीशु ने सिखाया था, कि तुम अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिय स्वर्ग पर धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा। और, जो कुछ तुम चाहते हो, यीशु ने कहा था, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही किया करो। (मत्ती 6:19-21 तथा 7:12)। इसी प्रकार यीशु ने और भी बहुत सी शिक्षाएं दी थीं जिनके बारे में हम बाइबल के नए नियम की पहली चार पुस्तकों में पढ़ते हैं।

इन्हीं पुस्तकों में हम यीशु के बड़े-बड़े सामर्थपूर्ण कामों के बारे में भी पढ़ते हैं। कुछ लोग आज भी यीशु की सामर्थ से उसी तरह के कामों को करने का झूठा दावा भी करते हैं। पर जो आश्चर्यपूर्ण और अद्‌भुत काम यीशु ने किए थे वे सब काम उन लोगों के कामों से बिल्कुल अलग थे। क्योंकि उसने कोढ़ियों को सिर से पांव तक तत्काल कहकर चंगा कर दिया था! उसने उन

लोगों को नई आंखें, नए पांव और नए हाथ दिये थे जिन के अंग थे ही नहीं! उसने मुर्दों को आवाज़ देकर कब्र में से बाहर निकाल दिया था! उसने आंधी और तूफ़ान को डांटकर थाम दिया था! और एक छोटे बच्चे का भोजन अपने हाथ में लेकर उस से उसने न केवल पांच हज़ार लोगों को खाना ही खिलाया था, पर उस के बचे हुए टुकड़े जब बटोरे गए थे तो उस से बारह हज़ार टोकरे भर गये थे!

पर सवाल यह है कि क्यों यीशु ने ये सब काम अपने चेलों के सामने दिखाए थे? ये सब आश्चर्यपूर्ण काम यीशु ने अपने चेलों के सामने इसलिए दिखाये थे, ताकि वे उन सब कामों के गवाह बन सकें। यीशु वास्तव में इन सब कामों को करने के लिये पृथ्वी पर नहीं आया था। वह तो वास्तव में पृथ्वी पर अपना बलिदान देने को आया था। वह अपने पापों का प्रायश्चित करने को आया था। लेकिन इस से पहले, कि उसे बलिदान किया जाता, यह बड़ा ही ज़रूरी था, कि उसके चेले, जिन्हें वह अपनी मौत के सुसमाचार को सुनाने के लिये सारे जगत में भेजनेवाला था, अच्छी तरह से यह जान लेते कि वह यीशु मसीह कोई मनुष्य मात्र ही नहीं था पर वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था! सो इसीलिये यीशु ने उन में अपने प्रति विश्वास पैदा करने के लिये उन सभी सामर्थ के कामों को किया था।

परन्तु फिर, वह समय आया था जिसे परमेश्वर ने ठहराया था। जबकि यीशु मसीह को एक अपराधी की तरह पकड़ा गया था, और उस पर झूठे दोष लगाए गए थे। और उसे क्रूस पर मृत्यु दन्ड की सज़ा सुनाई गई थी। वह मारा गया था और उसे गाड़ा गया था। पर वह फिर जी उठा था! क्योंकि उसका जी उठना भी उतना ही ज़रूरी था जितना कि उसका मारा जाना ज़रूरी था। क्योंकि उसका मुर्दों में से जी उठना ही इस बात का सबसे बड़ा

सबूत था कि वह सचमुच में परमेश्वर का पुत्र था!

बाइबल में लिखा है, कि यीशु मसीह आज सारे जगत के लागों का एक ज़िन्दा उद्धारकर्त्ता है! जी उठने के बाद जब यीशु वापस स्वर्ग में जा रहा था, तो उसने अपने चेलों को यह आज्ञा देकर सारे संसार में भेजा था, कि तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार सुनाओ। और, जो विश्वास करें उन्हें पिता, और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। क्योंकि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मत्ती 28:19, 20 तथा मरकुस 16:15, 16)। और तब से लेकर आज तक प्रभु यीशु मसीह का मुक्ति का सुसमाचार संसार में सब जगह किया जा रहा है। और जो लोग उसमें विश्वास लाकर अपना मन फिराते हैं और बपतिस्मा लेते हैं उन्हें मसीह अपनी कलीसिया में मिला लेता है। उसकी कलीसिया उसके उद्धार पाए हुए लोगों की मंडली है। क्या आप यीशु मसीह में विश्वास करके और उसकी आज्ञा को मानकर उसके अनुयायी बनना चाहते हैं?

परमेश्वर के एकलौते पुत्र के पापियों के लिये बलिदान होने का सुसमाचार जगत के सब लोगों के लिये है।